International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, Feb 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अठारहवीं शताब्दी के मारवाड़ राज्य में सामाजिक व्यवस्था का आर्थिक स्वरूप : एक आलोचनात्मक अध्ययन

नवीन कुमारी (शोधार्थी, इतिहास विभागद्य महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक)

सारांश :–

मानव एक सामाजिक प्राणी है और वह अपनी सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपने समाज के अन्य व्यक्तियों के साथ सम्बन्ध स्थापित करता है। वस्तुतः समाज केवल व्यक्तियों का समूह नहीं बल्कि विविध प्रकार के सामाजिक संबंधों की एक ऐसी व्यवस्था है जो परम्पराओं, रीति–रिवाजों, वर्ण, वर्ग, जाति और परिवार आदि संस्थाओं के सम्बन्धों से बनता है और निरंतर परिवर्तनशील रहता है। अगर यों कहा जाए कि मानव सभ्यता का सम्पूर्ण इतिहास विविध सामाजिक परिवर्तनों का इतिहास है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।प्रस्तुत शोध पत्र में अठारहवीं शताब्दी में मारवाड़ राज्य की परम्परागत वर्ण व्यवस्था व सामाजिक व्यवस्था के मूल ढाँचे पर प्रकाश डालते हुए उसके आर्थिक स्वरुप को समझने का प्रयास किया गया है।

संकेत शब्द :–अठारहवीं शताब्दी, राजस्थान, मारवाड़, वर्ण व्यवस्था, परिवार, जाति व्यवस्था, उत्पादक वर्ग, वितरक वर्ग, उपभोक्ता वर्ग

वैदिक काल से ही राजस्थान का सामाजिक ढांचा परम्परागत वर्ण व्यवस्था पर आधारित था मारवाड़ राज्य भी इससे अछूता नहीं था और यहाँ की सामाजिक व्यवस्था का मूल आधार भी वर्ण व्यवस्था पर टिका हुआ था जिसमें समाज ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य और क्षुद्र चार भागों में बंटा हुआ थाद्य इन चारों वर्णों के अलावा समाज में विविध प्रकार की खेतिहर और श्रमिक जातियाँ भी विद्यमान थी। प्रस्तुत शोध पत्र में अठारहवीं शताब्दी में मारवाड़ राज्य की सामाजिक व्यवस्था के मूल स्वरुप को समझते हुए इसके आर्थिक स्वरूप पर चर्चा की

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, Feb 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जाएगी।अगर सामाजिक व्यवस्था के आर्थिक स्वरुप पर चर्चा करें तो अठारहवीं शताब्दी में मारवाड़ के सामजिक ढाँचे को स्पष्ट रूप से तीन भागों में बाँटा जा सकता है[1]–

1.उत्पादक वर्ग

2.वितरक वर्ग

3.उपभोक्ता वर्ग

1. उत्पादक वर्ग :–

उत्पादक वर्ग में वे जातियाँ सम्मिलित थीं जो अपने व्यवसायों द्वारा समाज के उपयोग हेतु छोटी व बड़ी सभी वस्तुओं का उत्पादन करती थी। यह उत्पादन सभी जातियाँ अधिकांश अपने परम्परागत पेशे द्वारा ही करती थी। पर कुछ लोग ऐसे भी थे जिन्होंने अन्य जातियों के व्यवसाय भी अपना लिए थे। इस वर्ग का अध्ययन हम दो वर्गों में कर सकते हैं। एक कृषक वर्ग व दूसरा शिल्पी वर्ग।

(क) कृषक वर्ग :–

कृषक वर्ग में वे खेतिहर जातियाँ सम्मिलित थी जो कृषि उत्पादन का कार्य करती थीं। इनमें कुछ जातियाँ ऐसी थीं जो पूर्णतः कृषि पर ही निर्भर थीं। कुछ जातियाँ अपने अन्य व्यवसाय के साथ–साथ खेती भी करती थीं। मारवाड़ में यों तो खेती बहुत जातियाँ करती थीं। परन्तु मुख्यतरू काश्तकार जातियों में जाट, माली, पीतल, विश्नोई, सीरवी तथा कलबी जातियाँ मुख्य थीं जो खेती के अतिरिक्त अन्य व्यवसाय कम ही करती थीं।[2]

कृषक वर्ग में जाट सबसे प्रमुख जाति थी। जाट जाति के लोग कृषि कार्यों में सबसे अधिक निपुण समझे जाते थेद्य यही कारण था कि मारवाड़ में जाटों से सबसे अधिक मात्रा में कर वसूल किया जाता था क्योंकि अच्छे किसान होने के कारण सबसे अधिक उपज पैदा

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, Feb 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

करते थे।[3] जाटों के अलावा माली, बिश्नोई और कलबी आदि जातियाँ भी कृषि आधारित कार्यों में लगी हुई थी।[4]माली जाति के लोग मुख्य रूप से बागवानी का कार्य करते थे और प्रत्येक मौसम में अपनी भूमि को हरा भरा रखने का प्रयास करते थेद्य अठारहवीं शताब्दी के मारवाड़ राज्य में हमें वर्ण व्यवस्था के मूल स्वरुप में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन दिखाई देता हैद्य इस शताब्दी में हम देखते हैं कि मूल कृषक जातियों के अलावा ब्राह्मण, राजपूत और महाजन भी कृषि कार्यों में संलग्न हो गए थे।[5]

(ख) शिल्पी वर्ग :–

उत्पादक वर्ग का दूसरा भाग शिल्पी वर्ग से सम्बन्धित था जिसमें सुनार, लखारा, खाती, लोहार, जुलाहा, चूड़ीगर, ठठेरे और कलाल आदि जातियाँ थीं जो अपने परम्परागत व्यवसाय पर आधारित कार्यों द्वारा विविध प्रकार की वस्तुओं का उत्पादन करती थी। लोहार जाति प्रत्येक गाँव कस्बे में बसी मिल जाती थी। ये लोग कृषि एंव घरेलू कार्यों में काम आने वाले लोहे के सामान बनाते थे। इसके अतिरिक्त ये जाति तलवार, कटार, चाकू और तोप आदि शस्त्र भी बनाती थी।[6]

सुनारों का मुख्य कार्य आभूषण बनाना था किन्तु इसके साथ साथ बहुत से सुनार टकसालों में सिक्के डालने का कार्य भी करते थे। खाती जाति के लोग लकड़ी द्वारा खिलौने, खिड़की, दरवाजे, पलंग और कृषि औजारों को बनाने का काम करते थे। चमार जाति के लोगों की गिनती नीच जातियों में होती थी और ये मरे हुए पशुओं की खाल उतारने और जूते आदि उत्पाद बनाने का कार्य करते थे।[7]

लखारा जाति के लोग लाख की चूड़ियाँ बनाने का कार्य करते थे जबकि चूड़ीगर मुख्य रूप से हाथी दांत की चूड़ियाँ बनाते थे। ठठेरों का मुख्य पेशा काँसे, पीतल और चाँदी आदि धातुओं से बर्तन बनाने का था जबकि जुलाहे विभिन्न प्रकार के कपडे बनाने के काम में माहिर

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, Feb 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

होते थे। कुम्हार जाति के लोग मिटटी के बर्तन बनाते थे जबकि कलालों का मुख्य व्यवसाय शराब बनाना होता था।[8]

2. वितरक वर्ग :–

वितरक वर्ग के लोग उत्पादक वर्ग के द्वारा उत्पादित की हुई विभिन्न वस्तुओं को उपभोक्ता वर्ग तक पहुँचाने का कार्य करते थेद्य वितरक वर्ग में मुख्य रूप से महाजन, ब्राह्मण, चारण, भाट और बंजारे आदि लोग मुख्य रूप से शामिल थेद्य मारवाड़ राज्य में बनिया वर्ग को महाजन के नाम से जाना जाता था। इस वर्ग का मुख्य कार्य व्यापारिक गतिविधियों का संचालन करना थाद्य मारवाड़ प्रदेश के महाजन न केवल मारवाड़ में बल्कि बम्बई, कलकत्ता और मद्रास जैसे अन्य स्थानों पर भी व्यापारिक गतिविधियों में संलग्न थे।[9]

वितरक वर्ग में दूसरा स्थान ब्राह्मणों का था। परम्परागत वर्ण व्यवस्था में ब्राह्मणों को सर्वोच्च स्थान प्राप्त थाद्य अठारहवीं शताब्दी में ब्राह्मण वर्ग के लोग अपने परंपरागत व्यवसाय के साथ साथ कृषि और व्यापार आदि गतिविधियों में भी शामिल हो गए थे।[10]

वितरक वर्ग में चारण जाति भी विशेष भूमिका का निर्वहन करती थी। चारण जाति के लोगों का मुख्य व्यवसाय राजपूतों के साहसिक कार्यों को कविता के रूप में लिपिबद्ध करना था किन्तु अठारहवीं शताब्दी में चारण जाति के विभिन्न लोग कृषि और व्यापार आदि गतिविधियों में भी शामिल थे।[11]वितरक वर्ग में बंजारों की भी महत्वपूर्ण भूमिका थी। ये लोग न केवल व्यापारिक वस्तुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने का कार्य करते थे बल्कि व्यापारिक गतिविधियों में भी शामिल थे।

3. उपभोक्ता वर्ग :–

उत्पादक वर्ग व वितरक वर्ग के अतिरिक्त समाज में तीसरा वर्ग उपभोक्ता वर्ग होता है। उत्पादक वर्ग के लोग खाद्यान्न एवं अन्य सभी छोटी–बड़ी वस्तुओं का अपने परम्परागत

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, Feb 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

तरीकों से उत्पादन करते थे। वितरण वर्ग इन सभी वस्तुओं का वितरण कर सभी की आवश्यकताओं की पूर्ति करता था। इस वर्ग में कुलीन एवं मुत्सदी वर्ग, धार्मिक वर्ग तथा कुछ अन्य वर्ग के लोग सम्मिलित थे।

कुलीन वर्ग में शासक वर्ग के लोग शामिल थे जो प्रशासनिक कार्यों को पूर्ण करने का कार्य करते थे। यह वर्ग शान–ओ–शौकत का जीवन व्यतीत करता था और बड़े पैमाने पर शाही उपयोग के लिए हीरे, जवाहरात, अस्त्र–शस्त्र और महंगी पोशाकें आदि खरीदता था। शादी–ब्याह आदि विशेष अवसरों पर यह वर्ग जमकर खरीदारी करता था। बीकानेर की राजकुमारी सूरजकुंवर के विवाह के अवसर पर शाही परिवार द्वारा विविध प्रकार की वस्तुओं की खरीद का ब्यौरा बहियों से प्राप्त होता है।[12]शासक वर्ग के अलावा मुत्सदी, सामंत और भू–राजस्व व सैन्य प्रणाली से जुड़े विविध अधिकारी भी उपभोक्ता वर्ग में शामिल थे।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, Feb 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1]गुप्ता, बी.एल, ट्रेड एंड कॉमर्स इन राजस्थान ड्यूरिंग द एटिंथ सेंचुरी, जयपुर पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, 1987, पृष्ठ 21

2 रिपोर्ट, मरदुमशुमारी, राज मारवाड़, 1891 : राजस्थान की जातियों का इतिहास एवं उनके रीति–रिवाज / राय बहादुर मुंशी हरदयाल सिंह; प्रस्तावना जहूर खां मेहर, महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश शोध केंद्र,जोधपुर, 2010, पृष्ठ 80

3 सनद परवाना बही, नं. 25, पत्रांक 52, महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश शोध केंद्र, जोधपुर

4 आर.पी. व्यास, राजस्थान का वृहत् इतिहास, पृ. 423

5 बी.एल. गुप्ता, ट्रेड एण्ड कॉमर्स इन राजस्थान, पूर्वोक्त, पृ. 22

6 बी.एल. गुप्ता, पूर्वोक्त, पृ. 23

7 बी.एल. गुप्ता, पूर्वोक्त, पृ. 24

8 बी.एल. गुप्ता, पूर्वोक्त, पृ. 24

9 रिपोर्ट, मरदुमशुमारी, राज मारवाड़, 1891 : राजस्थान की जातियों का इतिहास एवं उनके रीति–रिवाज / राय बहादुर मुंशी हरदयाल सिंह; प्रस्तावना जहूर खां मेहर, महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश शोध केंद्र,जोधपुर, 2010, पृष्ठ 420

10 व्यास, डॉ. आर.पी., राजस्थान का वृहत इतिहास, खंड 1, पृ. 419

11 मोहनलाल जिज्ञासु, चारण साहित्य का इतिहास, भाग 1, पृ. 233

12 सूरज कंवर रै ब्याव री बही, संपा. डॉ. महेन्द्र सिंह नगर, पृष्ठ 60–70